Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५४९७० घ

Title नागलीला

Author ।

Extent ८ **Age** ।

Subject काव्यम् - संपूर्णम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं॰ ५५८९०—घ

नागलीला (हिंदीका

पत्राणि ८ (अष्ट) (संपूर्णम्

~~नं॰ १९९९~~

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सं० ५४६०-घ

८६६६ के
नाग लीला
पत्रानी ८
काव्य (हिंदी)

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ गौंधवे ब्रु
विग्न यज्ञ मन्दता उस पूजा ओ
नरो प्रभु जाय कै॥ उना गाना
गलो दो नो वै दे। श्री कृस जो
पौढे जाय कै। कहत नागः

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
१

नील्हवैश्रमजीजाउवेवाल·
कभाताकै ॥ नेत्र्वप्वदेखकैमे
दयाजश्राँवैनैमहीनाताभा
वेजाताकै ॥ श्रवभावथाकैकु
ललाजश्राँवै ॥ श्रवभावथाद्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैसेवते॥ इतीद्वयसीद्वाग
पस्मितो॥ नेवीनागासोकु
विलवैते॥ का रेवालकप
यवलेकावैरवामापो॥
कानेमननमेक्रापउपन्या

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
२

किंग्रहनासंनाशयो॥ नहि
रिपस्थितीपंथछली॥ नाव
रीवरमाहये॥ नामेवीमनमै
कोयउपजा॥ नाग्रहनावसे
नाहये॥ अथरराजा३ः रवि॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रज्यादेविकेकेहस्वचाहिये॥
राजेकंससैतेवाइमेंग्रैमेता
गतपतस्त्राएथे॥कहांतमा
देसवालका॥कहांतमायत्रा
महे॥किसमाताजीकेवाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
१

ककहिये॥ कान्हमारानाम
है॥ श्रीवींद्रावनमैदेसहमा
रा॥ गोकलजीहमाराग्राम
है॥ माताजसोधाजीकोबा
लककहिये॥ श्रीकृलजीह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मारानामहै॥ लिज्यारिलडे॰
किगलफूलमाला॥ लिज्या
नोलषम्प्रारिया॥ पतनिलि॰
गारजारिवालकुमैघोतेीता
गासचोरिया॥ कालकोरग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना लछलछमालाकाकोलछ
५ मेरियां ॥ श्रीवींद्रावनमैगाडि
ऊझेलातिरी। नागकेमैको
डोरियां ॥ हायांकेकेवाड़.का
नोकेकंडला ॥ सवालघादी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

याचोरिया। नहिरिविप्रनही
भिषारेश्रीनंदजीकीबाल॰
को॥ माताजपसोयादहीफुर
लेनेअमांगेकालेनागाको॥
चरनचंपीभजामेरारी॥ना॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
५

गतोनागजगाइयो॥ उठरिउ
ठवलवंतजोधापकवालक
खेलतत्राइयो॥ तवउठजागेप
मंडलीकाराजाइंद्रजोगारना
इयो॥ श्रीरघामीजीकेमुकट

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाजपटकीनीश्रीकमलजीख
ऊटबचाइयो॥ लानमोकीचै
टबैठीनागकोफुणमारियो॥
हाथबांधकेकेवाबिनतीख
इनामिनेनागको॥गालाबिच·

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना पलवामेद्रासीनेरी ॥ रघमेमो
६ रेह्रद्राणको ॥ कालीसेलीक्रा
लेंनाणनृनयथो ॥ मथुरामेकं
6 सपक्ष्मारेयो ॥ ह्रारिस्ह्रजन
सह्रजोतवामी ॥ लेकामेरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वणामारियो॥ डपराकोलाउ
गधीसुधामाभक्तउपारियो॥
अटलपदवीध्रुवकोदिनप्र
ह्लादभक्तउपारियो॥ गर्भकी
यावलिदातवराजापनाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
७
7

कोपटारयो॥ ईननागर्भतः
॥ कैसैपयतौजिननागर्भकोः
योह्रजारयो॥ गर्भकीया
चकवीचकवादैनविह्नोः
डाकरजारियो॥ ईननागर्भ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

९

नकीजैपद्मनीजिननार्भकी·
योसिरजाउ्यो॥नाभकीयोर
त्नाकरसागरजलभ्राभाकरउ
पियो॥२रतनागर्भनकीजेपद्म
नीजिननार्भकीयोसिरजाउ्यो॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

११४

ना ८ नागलीला जो मैं कह्यो श्री-
कृस्ण विना विचारियो ॥३ इति
श्री नागलीला संपूर्णम् ॥

नं. ६९

५९९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० ५४६०-घ

नागलीला (हिन्दीकाव्यम्)
पत्राणि ८ (अष्ट)
(संपूर्णम्)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri